भारतीय समाज पर वैश्विक महामारी

कोविड-19 का प्रभाव

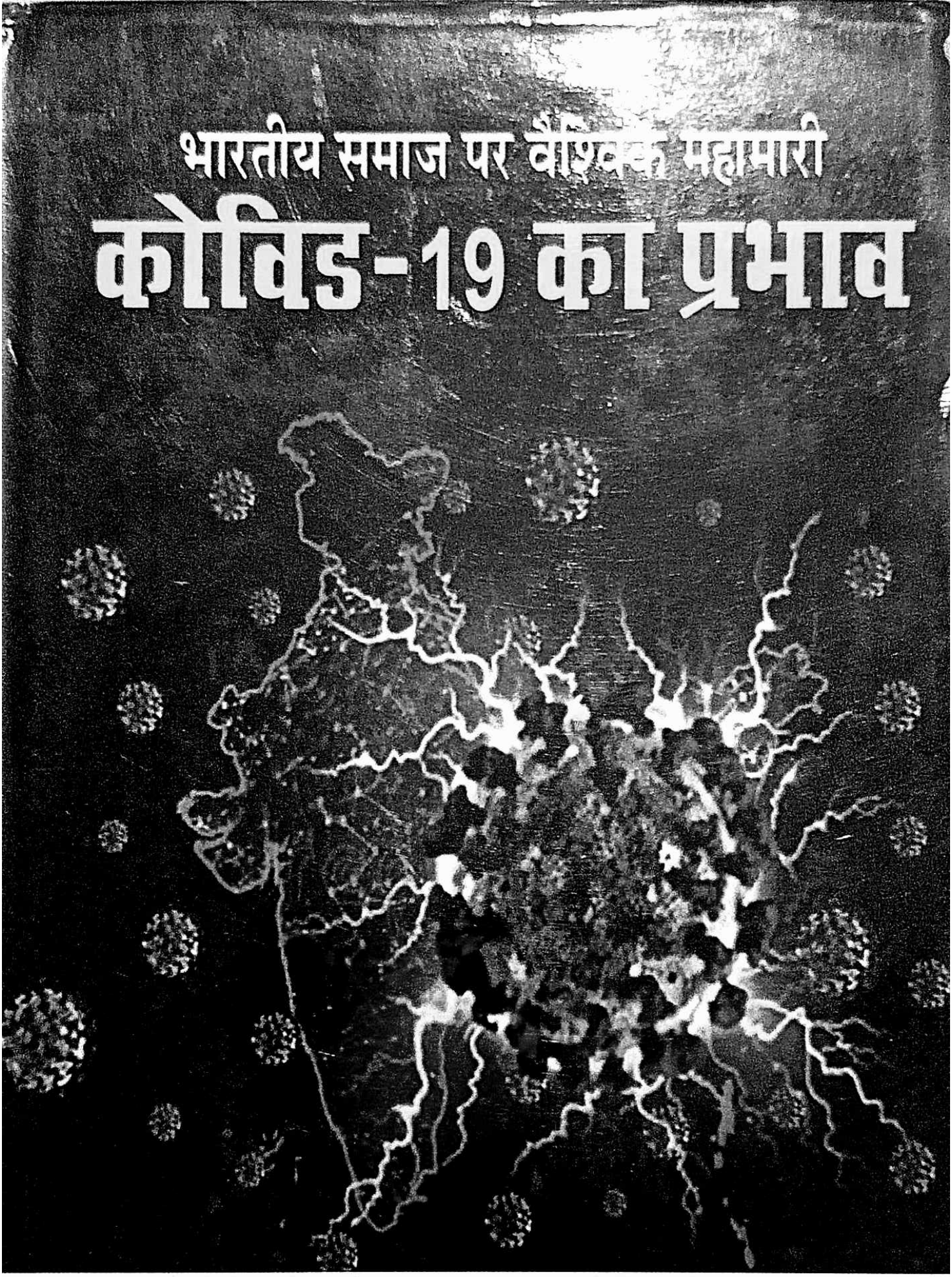

संपादक : डॉ. निधि कश्यप

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-81-946522-9-8

प्रथम संस्करण-2020

© संपादकाधीन

पुस्तक : भारतीय समाज पर वैश्विक महामारी कोविड-19 का प्रभाव

संपादक : डॉ. निधि कश्यप

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

मूल्य : ₹ 795.00 (सात सौ पंचानवे रुपये मात्र)

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

जिल्द-सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर-01

अनुक्रम

1. कोविड–19 एवं मानव जीवन 13
डॉ० हरि प्रकाश श्रीवास्तव
2. महामारियाँ : अतीत वर्तमान और भविष्य 35
डॉ. सी. डेनियल
3. कोविड–19 उन्मुलन हेतु प्रशासनिक प्रयास 40
श्रीमती ममता कुमारी तिवाड़ी (RAS), डॉ. अनिल कुमार पारीक
4. आरोग्य जीवन हेतु योग एवं आयुर्वेद चिकित्सा : एक विमर्श 53
डॉ. मीना गुप्ता
5. कोविड–19 का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव 62
डॉ. आरती विश्नोई
6. भारत में कोविड–19 की चुनौती एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में अवसर एवं संभावनायें 66
डॉ. वंदना द्विवेदी, नेहा सविता
7. कोराना काल में संत साहित्य की प्रासंगिकता 73
डॉ. निधि कश्यप, नीतू गुप्ता
8. कोरोना काल में साहित्य की भूमिका 77
डॉ. सुषमा पुरवार
9. कोविड–19 महामारी–प्रभाव व परिणाम 80
डॉ. श्रीमती गायत्री वाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी
10. भारत की भावी शिक्षा नीति : दृष्टि और आयाम 86
डॉ. पवन कुमार त्रिवेदी
11. शिक्षा एवं कोरोनाकाल में वैश्विक परिदृश्य 90
डॉ. हरिणी रानी आगर
12. कोविड–19 का संस्कृति एवं शिक्षा पर प्रभाव : चुनौती एवं सुझाव 96
डॉ. सुहासिनी श्रीवास्तव
13. लोकतंत्र के उत्थान और पतन के मूल वाहक : मीडिया और राजनीति 100
डॉ. अनुज कुमार मिश्रा
14. भारतीय समाज पर वैश्विक महामारी कोविड–19 का प्रभाव 111
डॉ. पुनीत सक्सेना, अनुपमा पाण्डेय
15. कोविड का प्रभाव प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक 119
अशोक कुमार वर्मा
16. अभावग्रस्त जीवन : कोविड–19 123
डॉ. एम. आर. आगर
17. वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक न्याय और कोविड–19 130
शशिकांत
18. वर्तमान तथा भविष्य पर कोविड का प्रभाव 141
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते
19. वैश्विक आपदा के बीच मानव–जन–जीवन 146
डॉ. (सुश्री) भावना कमाने, डॉ. सत्येन्द्र सिंह
20. कोरोना मंथन : भारत के विशेष संदर्भ में 151
डॉ. वृन्दासेन गुप्ता
21. वर्तमान परिदृश्य में पत्रकारिता का महत्व 155
डॉ. तुकाराम चाटे, प्रा. रघुनाथ नामदेव वाकले
22. वर्तमान समसामयिक अवस्था एवं अन्य परिस्थितियाँ 160
डॉ. शशि गुप्ता, डॉ. जयश्री किनारीवाल–कुमावत
23. कोविड–19 के प्रभाव में सामान्य जन–जीवन 167
डॉ अंजली सिंह, सूर्यबाला मिश्रा
24. विश्व मानवता को वैश्विक महामारी कोविड–19 का तल्ख संदेश 173
डॉ. राहुल शुक्ल, डॉ. अरुण कुमार
25. भारतीय समाज पर वैश्विक महामारी कोविड–19 का प्रभाव 177
डॉ. प्रतिभा बाजपेई
26. भारतीय शिक्षा पर कोविड का प्रभाव 182
डॉ. उषा तिवारी
27. कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा की दशा और दिशा 187
लोपामुद्रा बेहेरा
28. कोरोना महामारी और मजदूरों की दुर्दशा 190
डॉ. जानकी झा
29. वैश्विक संकट एवं श्रमिकों की दशा 194
डॉ. इन्दू विश्वकर्मा
30. वैश्विक महामारी कोविड–19 से उपजे संकट से निपटने में गाँवों की भूमिका 200
देवेन्द्र कुमार सिंह

18.
वर्तमान तथा भविष्य पर कोविड का प्रभाव

*डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
**डॉ. धीरज जनार्धन व्हते

यह पूर्णतः सत्य है कि प्रत्येक परिस्थिति का प्रभाव मनुष्य की दिनचर्या पर ही होता है, चाहे वह हानिकारक हो या लाभदायक उसका भला या बुरा असर व्यक्ति को ही झेलना होता है। इसकी पुष्टि इस समय सबसे दमरकारी एवं सर्वनाश का रूप लेती कोरोना महामारी की मार से है जो कि हमारे समाज को अस्त–व्यस्त कर मानव–जाति की विडम्बनाओं को और भी बढ़ावा दिया है। इसका प्रभाव समस्त कार्य–काल पर बहुत ही भयानक होने वाला है। वास्तव में कोरोना एक ऐसी वैश्विक समस्या बनकर सम्पूर्ण विश्व को तबाह कर दिया है प्रथम बार यह चीन से आया और देखते ही देखते सारे विश्व को अपने गिरफ्त में ले लिया है। यह वायरस पुर्णतः चीन से आया हुआ ही है, और धीरे–धीरे यह सारे संसार को अपने चपेट में ले चुका है। शनैः शनैः यह कोरोना एक छोटे से वायरस से एक वैश्विक महामारी के रूप में सभी प्राणियों की रोजमर्रा के जीवन पर अपना स्थान बना लिया है। इसके आने से सम्पूर्ण विश्व के साथ जुड़ी अनेक मजबूत प्रणालियों का आपस में जो व्यापारिक या गैर व्यापारिक सबंध थे वो भी अब कोरोना की महामारी के कारण ये सभी कार्य पूर्णतः स्थगित हो चुके हैं। इस वायरस से लगभग सारे काम ठप हो गये हैं लेकिन मुख्यरूप से शिक्षा एवं स्वास्थ्य अधिक ही प्रभावित हुए हैं जिसके वजह से आज तो समस्या है ही पर आने वाले दिनों में यह समस्या और भी बढ़ जायेगी जिसके प्रभाव से सारे कार्य हमेशा के लिए बदल जायेगें । ये ही वह वजह है जिसके कारण सरकारों ने समस्त आने–जाने वाले देशों का आपस में मेल–जोल पर पूर्णतः रोक लगा दिया है। वास्तव में लॉकडाउन की प्रक्रिया से ही हमारे देश में कुछ इसका प्रकोप कम हुआ है। नहीं बांकी के देशों में तो यह महामारी इतनी अधिक बढ़ चुकी है की पीढ़ितों की संख्या तथा मरने वालों का अनुपात ही नहीं बताया जाता है। क्योंकि कहीं मरने वाले व्यक्ति ऐसे भी हैं

जिनकी 'बॉडी' मरने के बाद उनके परिजनों तक पहुंच ही नहीं पाई है। सभी जगह एक दहशत का वातावरण बन गया है, जिधर भी जाओं प्रत्येक व्यक्ति इस डर से खुद अपनों से भी दूरी बनाकर रह रहा है की कहीं यह कोरोना ग्रसित तो नहीं इस तरह से माना जाय तो यह वर्तमान में तो अपनी रांकट से भरे जीवन जीने को मजबूर कर ही रहा है बल्कि आने वाले भविष्य में भी इसका प्रभाव इतना होगा कि आज जो कार्य पूर्णतः बन्द हैं उनका असर सम्पूर्ण समाज पर होना निश्चित है।लगभग सारे विश्व की 7.8 की आवादी इस समय कोरोना की वैश्विक महामारी के कारण कुछ इतने मजबूर हो गये हैं कि अपने घरों में बन्द होने को विवश हो गये हैं। अभी तक काफी जनता ऐसी है जिन्हें यह पता ही नहीं की आखिर आने वाला भविष्य किस–किस रूप में हमारे सामने एक से बढ़कर एक विकट समस्या लाकर खड़ा कर सकता है। सर्वप्रथम आज की उपयोगिता है कि सभी को सर्वोच्चम प्राथमिकता है अपनी जीवन डोर को बचाने की जिसके कारण हमारी वर्तमान भविष्य सभी निर्भर हैं। जीवन को सुरक्षित रखने का यही उदेश्य ही भविष्य की सफलता है। हालाकि लॉकडाउन विशेषकर कुछ लोगों के लिए मुसीबत बन गया है, जिसका मुख्य कारण यह है कि लॉकडाउन एक नवीन प्रणाली है जो इस महामारी में लागू की गई है, पर यह सामान्य जीवन जीने वाले लोगों के लिए एक समस्या बन चुकी है। अतः तो स्पष्ट है कि जब तक यह खतम होगा तब तक सम्पूर्ण विश्व की सूरत परिवर्तित हो जायेगी । इस बात को लेकर पूरे देश में सहमति है कि अगले आने वाले भविष्य में इसका प्रभाव अधिकतर दिखेगा । क्योंकि अगले कुछ सालों तक कोविड–19 के प्रभाव से जूझती रहेगी एवं फिर उबरने के बाद पुननिर्माण की प्रकिया में लग जायेंगें। जहां आज प्रत्येक स्तर पर लोगों के छोटे–मोटे कार्य नौकरी सब छूट गये हैं व्यापारिक काम बन्द होने पर किसी भी वस्तु की आपूर्ति नही हो पाती है। दरअसल इस वैश्विक महामारी के कारण सभी संस्थानों का पूर्णतः बन्द हो जाना , लगभग अधिकांश हिस्सों की सीमाएं बन्द हैं हवाई अड्डे , होटल के साथ –साथ शैक्षणिक संस्थान भी बन्द हो गये हैं। आज सर्वप्रथम प्राथमिकता इस बात को दे सकते हैं कि हमें स्वस्थ्य को ध्यान देना है और उसके बाद फिर इससे निपटने के बाद कोविड से बचने का इलाज भी करना होगा । वर्तमान की दुविधा को देखते हुए सरकार ने शिक्षा को ऑनलाइन कर दिया है जिसके कारण शिक्षा का क्षेत्र उतना अधिक प्रभावित नहीं हो पा रहा है। अन्य देशों के संपर्क खतम होने से आयात – निर्यात की व्यवस्था डगमगाई है जिसके कारण प्रायः जो वस्तुओं की आपूर्ति है उसका दंश तो झेलना ही पड़ेगा और अभी जो है वो तो है ही लेकिन आने वाला समय सभी वस्तुओं की कमियों का एहसास करायेगा। हालांकि कुछ

खास बदलाव हमारे जीवन मे और भी हुए हैं जो रोजमर्रा के जीवन–शैली को परिवर्तित कर रहे हैं। उसका प्रभाव हमारे जीवन में बहुत कुछ आदतन पर भी हो रहा है जिसके कारण हमारी अपनी कार्य–शैली निरन्तर चलती रहती है। वर्तमान में कोविड का प्रभाव सारे विश्व पर बहुत ही बहुलता से होता जा रहा है। और इसका असर भी प्रत्येक स्थान पर दिखाई देता है, कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता नहीं है। अतः भविष्य में कभी भी इस महामारी का भयानक कहर युगों–युगों तक इस पृथ्वी पर समाज की गतिविधियों पर दिखाई देगा यह बिल्कुल सत्य और अखण्ड है जिसे मिटाया नहीं जा सकता है। कोरोना के रूप आई यह समस्या समस्त भारतीय उद्योगों को अपनी चपेट में ले लिया है सब फैक्ट्रियों का काम अब स्थगित हो चुका है जिसके कारण वहां काम करने वाले साधारण मजदूरों का घर अब दो जून की रोटी के लिए भी मोहताज हो गया हैं । यह अत्यन्त सत्य है कि आज जो हमारा भविष्य हैं यानि कि हमारी युवा पीढ़ी जिसके कन्धे पर आने वाले वक्त का बोझ है वह अपनी वर्तमान की शिक्षा ही हासिल नहीं कर पा रहें हैं एवं उनको उचित सुविधाएं भी उपलब्ध होना बड़ा ही कठिन और दुष्कर कार्य हैं। और जब शिक्षा बाधित है तब तो कोई भी कार्य सफलता पूर्वक सम्पूर्ण ही नहीं किया जा सकता है। तथा जब आज यह आवश्यक तथ्य अपनी चरम स्थिति को पहुंच ही नही पायेगा तब तो यह बिल्कुल ही भविष्य के लिए सही नही है। दरअसल 'आर.बी.आई.'' की एक रिपोर्ट के अनुसार पॉलिसी के विषय में एक घोषणा हुई है एव उसमें कहा गया है कि लॉकडाउन का असर घरेलू वस्तुओं पर तो स्वाभाविक ही है किन्तु इस महामारी का सबसे अधिक प्रभाव ग्लोबल इकोनॉमी पर दिखाई दे सकता है।वास्तविकता तो यह है कि सोशल डिस्टेन्स तथा यह लॉकडाउन के कारण दुनियाभर के प्रत्येक कोने में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था डगमगाई हुई है । सम्भवतः क्यों यह तो तय ही है कि यह असर भविष्य में सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर सकता है। सामान्यतः देखा जाय तो सारी दुनिया के समक्ष एक सवाल बड़ी ही प्रखरता से उठ रहा है और वह है की इसकी समाप्ति के बाद आखिर दुनिया किस प्रकार से अपना जीवन यापन का साधन जुटाकर एक कुशल भविष्य बना सकेगी। पायः सभी महत्वपूर्ण कार्य जनता अपने हित के लिए ही करती है जिसमें वर्तमान के अलावा भविष्य भी सुरक्षित रखने जैसे काम प्रमुखता में रहते हैं। कोविड के कारण भविष्य में होने वाले कार्यों को काफी वर्षों तक नुकसान झेलना होता है। और इसी कारण थोड़ा बहुत आवश्यक वस्तुओं की विक्रय प्रणाली में समस्त व्यापारियों ने रोक नहीं लगाई तथा इसी कारण तो उनका व्यापार लगातार ही घाटे खाकर समस्त मुश्किलों से होता हुआ जब महान भावों के साथ एक हुआ तब इतनी कमजोर कड़ियो के माध्यम

से ही अपना समाज बचा ही लिया। हालाकि एक तरफ यह भी कहा गया है कि भविष्य को लेकर केन्द्र सरकार के कदम बहुत तेजी से समस्याओं के हल तक पहुंच सकते हैं। किन्तु जो हानि आज परे भारत को हो ससार को झेलनी पड़ रही है वह तो बिल्कुल एक असहनीय पीड़ा की तरह है। बात अगर आर्थिक व्यवस्था के विषय में हो तो केन्द्रीय बैंक की ओर से यह बात साफ हुई है कि इस महामारी का बढ़ता हुआ प्रकोप एवं अवधि और तीव्रता को लेकर स्थिकि का आकलन किया जाय तो इस वायरस के कारण जो बन्द की प्रकिया निरन्तर लागू हुई है तो उसका असर यह होगा की वैश्विक गतिविधियों जो सुस्ती का माहौल है वह निश्चित ही देश की आर्थिक विकास की दरों पर भारी पड़ सकती है यह बात बिल्कुल सटीकता से सरकार के सामने आकर खड़ी हो सकती है।

यही तंगी आगे चलकर सम्पूर्ण विश्व के लिए बहुत अधिक समस्यादायक रूप ले सकती है, क्योंकि जिस तीव्रता से आज के समय में यह महामारी सभी क्षेत्रों में निरन्तर अपना पांव पसारे फैल रही है इन सब परिस्थितियों को देखते हुए यह साफ ही हो गया है कि कोरोना नामक यह तबाही आने वाले भविष्य की तस्वीर पर अपनी गहरी छाप डालकर जायेगी। अभी तो लगभग–लगभग किसी को भी यह अन्दाजा नही हो पा रहा है कि यह आबादी क्या रूप लेकर आ सकती है हमारे भविष्य के लिए पर इसना अवश्य है कि वर्तमान में प्रमुख समस्या है प्रत्येक प्राणी को अपने जीवन की सुरक्षा और अगर जीवन सुरक्षित है तो संघर्ष कर कभी न कभी इस संकट के दौर से बाहर आकर हम आगे भी कार्यों को सफलता से कर सकते हैं। दरअसल यह वायरस एक युद्ध की तरह है जैसे द्वितीय युद्ध हमारे समस्त विश्व को अपनी चपेट में ले लिया था वैसे ही यह कोरोना के रूप में हमारा शत्रु ही है जिससे वर्तमान में उलझा तो नहीं जा सकता और न ही खतम किया जा सकता मात्र इस अप्रत्याशित शत्रु की मार से बचकर रहना ही हितकर होगा। यह अवश्य है कि हम इसके प्रकोप से बचने के लिए सफल योजनाओं का निर्माण कर सकते हैं और भविष्य की कुछ परेशानियों का हल भी निकालना आसान हो सकता है। वास्तव में कोरोना का जो काल वो लागों की भूंख को भी प्रभावित कर रहा है। उसका प्रमुख कारण यह है कि कहीं–कहीं खाद्य सामग्री की भरपूर व्यवस्था नहीं है और कहीं चिन्ताएं हैं जो भविष्य को लेकर लोगों के दिलो दिमाग को जकड़े हुए हैं इसका प्रभाव कमजोर तबके में जीवन–यापन करने वाले लोगों पर अधिक दिखाई देता है। हालाकि इतनी समस्या के बावजूद भी कोविड का प्रभाव वैश्विक खाद्य आपूर्ति पर नहीं हुआ है, किन्तु व्यक्ति अपने चिन्ता के चलते ग्रस्त होकर, या फिर खाद्य निर्णायक अपनी मानसिक स्थिति की दहशत के अनुसार अगर

सोचते हैं तो स्थिति विगड़ सकती है।वर्तमान तो इसकी वजह से खतरे में है ही उसके अलावा भविष्य भी इसके प्रकोप से अछूता नही रह पायेगा यह निश्चित है क्योंकि आज का किया गया निवेश ही हमारे भविष्य में हमें काम आ सकता है। खतरा इस कारण भी अधिक लग रहा है कि कोविड–19 की वैश्विक समस्या ने सारी दुनिया को आर्थिक रूप से सामाजिक रूप से अव्यवस्थित कर दिया है तथा साथ ही राजनीतिक स्थिति का पलरा भी बहुत गिर चुका है। आज के दौर की इस समस्या ने सभी को बुनियादी तौर से विचार करने पर मजबूर कर दिया है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर यह बात स्पष्ट ही है कि कोविड का यह प्रहार हमारे सम्पूर्ण क्रिया–कलापों पर वर्तमान में तो असर कर ही रहा है किन्तु इसका असर हमारे भविष्य के लिए भी एक भयानक खतरा बनकर अपना स्वरूप छोड़कर जायेगा। 'वर्तमान और भविष्य पर कोविड का प्रभाव' बड़ी ही गहराई से पड़ेगा जिसका आभास पूर्ण रूप से होने लगा है मात्र खाद्य व्यवस्था या रोजाना की दो पैसे की कमाई से भला देश किस तरह से विकास की राह पर चल पायेगा उसके लिए तो स्वतंत्रता से कार्य करने की आवश्यकता है जो कि अभी सम्भव ही नहीं है।भविष्य में होने वाले विनाशकारी काल का आगामी स्वरूप वर्तमान के क्रिया–कलापों से लगाया जा सकता है।

संदर्भ

1. दैनिक भास्कर (दैनिक समाचार पत्र)
2. विन्ध्य भारत (साप्ताहिक समाचार)
3. दूरदर्शन चैनलों की सहायता से
4. आज (दैनिक समाचार–पत्र)
5. नई दुनिया (दैनिक समाचार–पत्र)

*सहायक प्राध्यापक, हिंदी–विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, जिला– नांदेड (महाराष्ट्र)
मो. 8180875513

**सहायक प्राध्यापक, हिंदी–विभाग संजीवनी महाविद्यालय,
चापोली, चाकूर, लातूर (महाराष्ट्र)
मो. 9823148848